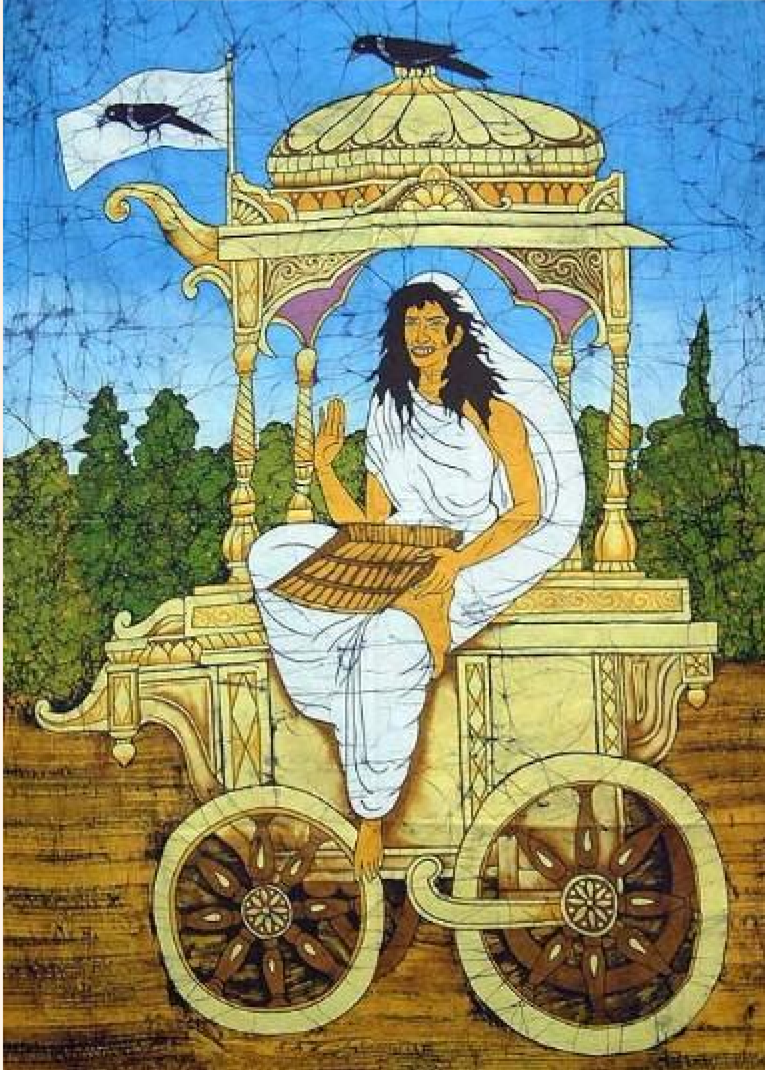
# धूमावती गूढ रहस्यम !



माँ धूमावती दस महाविद्याओं में सातवीं महाविद्या हैं। बगलामुखी की अंगविद्या हैं इसीलिए माँ बगलामुखी से साधना की आज्ञा लेनी चाहिए और प्रार्थना करना चाहिए की माँ पूरी कराये . ज्ञान के आभाव में या कौतुहल से किताब , इन्टरनेट से पढ़कर प्रयोग करने से विपत्ति में भी फसते देखे गये हैं . बगलामुखी साधना करने के पश्चात ही धूमावती साधना विशेष करने की योग्यता मिलती है .इसीलिए विशेष परिस्थिति में गुरु से प्रक्रिया जानकार ही शुरू करना चाहिए . गुरु जानते हैं की शिष्य की योग्यता क्या है . धूमावती साधना सबके बस

की नहीं . इनके काम करने का ढंग बिलकुल अलग है . बांकी महाविद्या श्री देती हैं और धूमावती श्री विहीनता अपने सूप में लेकर चली जाती है . जीवन से दुर्भाग्य , अज्ञान , दुःख , रोग , कलह , शत्रु विदा होते ही साधक ज्ञान, श्री और रहस्य र्शी हो जाता है और साधना में उच्चतम शिखर पे पहुच जाता है .
इन्हे अलक्ष्मी या ज्येष्ठालक्ष्मी यानि लक्ष्मी की बड़ी बहन भी कहा जाता है।ज्येष्ठ मास शुक्ल पक्ष अष्टमी को माँ धूमावती जयंती के रूप में मनाया जाता है।

मां धूमावती विधवा स्वरूप में पूजी जाती हैं तथा इनका वाहन कौवा है, ये श्वेत वस्त्र धारण कि हुए, खुले केश रुप में होती हैं। धूमावती महाविद्या ही ऐसी शक्ति हैं जो व्यक्ति की दीनहीन अवस्था का कारण हैं। विधवा के आचरण वाली यह महाशक्ति दुःख दारिद्रय की स्वामिनी होते हुए भी अपने भक्तों पर कृपा करती हैं।

इनका ध्यान इस प्रकार बताया है '– अत्यन्त लम्बी, मलिनव , रूक्षवर्णा, कान्तिहीन, चंचला, दुष्टा, बिखरे बालों वाली, विधव , रूखी आखों वाल , शत्रु के लिये उद्वेग कारिणी, लम्बे विरल दांतों वाली, बुभुक्षिता, पसीने से आर्द्र स्तन नीचे लटके हो, सूप युक्ता, हाथ फटकारती हुई, बडी नासिका, कुटिला , भयप्र ,कृष्णवर्ण, कलहप्रि , तथा बिना पहिये वाले जिसके रथ पर कौआ बैठा हो ऐसी देवी का मैं ध्यान करता हु .

देवी का मुख्य अस्त्र है सूप जिसमे ये समस्त विश्व को समेट कर महाप्रलय कर देती हैं।

दस महाविद्यायों में दारुण विद्या कह कर देवी को पूजा जाता है। शाप देने नष्ट करने व संहार करने की जितनी भी क्षमताएं है वो देवी के कारण ही है। क्रोधमय ऋषियों की मूल शक्ति धूमावती हैं जैसे दुर्वासा, अंगीरा, भृगु, परशुराम आदि

सृष्टि कलह के देवी होने के कारण इनको कलहप्रिय भी कहा जाता है , चातुर्मास ही देवी का प्रमुख समय होता है जब इनको प्रसन्न किया जाता है।
देश के कई भागों में नर्क चतुर्दशी पर घर से कूड़ा करकट साफ कर उसे घर से बाहर कर अलक्ष्मी से प्रार्थना की जाती है की आप हमारे सारे दारिद्र्य लेकर विदा होइए।

ज्योतिष शास्त्रानुसार मां धूमावती का संबंध केतु ग्रह तथा इनका नक्षत्र ज्येष्ठा है। इस कारण इन्हें ज्येष्ठा भी कहा जाता है। ज्योतिष शस्त्र अनुसार अगर किसी व्यक्ति की कुण्डली में केतु ग्रह श्रेष्ठ जगह पर कार्यरत हो अथवा केतु ग्रह से सहयता मिल रही ही तो व्यक्ति के जीवन में दुख दारिद्रय और दुर्भाग्य से छुटकारा मिलता है। केतु ग्रह की प्रबलता से व्यक्ति सभी प्रकार के कर्जों से मुक्ति पाता है और उसके जीवन में धन, सुख और ऐश्वर्य की वृद्धि होती है।

देवी का प्राकट्य :-

पहली कहानी तो यह है कि जब सती ने पिता के यज्ञ में स्वेच्छा से स्वयं को जला कर भस्म कर दिया तो उनके जलते हुए शरीर से जो धुआँ निकला, उससे धूमावती का जन्म हुआ. इसीलिए वे हमेशा उदास रहती हैं. यानी धूमावती धुएँ के रूप में सती का भौतिक स्वरूप है. सती का जो कुछ बचा रहा- उदास धुआँ।

दूसरी कहानी यह है कि एक बार सती शिव के साथ हिमालय में विचरण कर रही थी. तभी उन्हें ज़ोरों की भूख लगी. उन्होने शिव से कहा-" मुझे भूख लगी है. मेरे लिए भोजन का प्रबंध करें." शिव ने कहा-" अभी कोई प्रबंध नहीं हो सकता." तब सती ने कहा-" ठीक है, मैं तुम्हें ही खा जाती हूँ। " और वे शिव को ही निगल गयीं। शिव, जो इस जगत के सर्जक हैं, परिपालक हैं।

फिर शिव ने उनसे अनुरोध किया कि' मुझे बाहर निकालो', तो उन्होंने उगल कर उन्हें बाहर निकाल दिया. निकालने के बाद शिव ने उन्हें शाप दिया कि ' अभी से तुम विधवा रूप में रहोगी.'

तभी से वे विधवा हैं-अभिशप्त ः परित .भूख लगना और पति को निगल जाना सांकेतिक है. यह इंसान की कामनाओं का प्रतीक है, जो कभी ख़त्म नही होती और इसलिए वह हमेशा असंतुष्ट रहता है. माँ धूमावती उन कामनाओं को खा जाने यानी नष्ट करने की ओर इशारा करती हैं।

नोट :-

कुछ लोग का मानना है कि गृहस्थ लोग को देवी कि साधना नई करनी चाहिए। वहीँ कुछ का ऐसा मानना है कि र्या इन साधना करनी भी हो घर से दूर एकांत स्था में अथवा एकाँकी रूप से करनी चाहिए। **पर ऐसी कोई बात नहीं घर पे भी अनुष्ठान कर सकते हैं .हमारे संपर्क में ऐसे साधक हैं जो घर पे साधना रत हैं और सब चकाचक है .**

विशेष ध्यान देने की बात ये है की इन महाविद्या का स्थायी आह्वाहन नहीं होता अर्थात इन्हे लम्बे समय तक घर में स्थापित या

विराजमान होने की कामना नहीं करनी चाहिए क्यूंकि ये दुःख क्लेश और दरिद्रता की देवी हैं। जप शुरू करने से पहले आवाहन करें और ख़त्म होने पे विसर्जन कर दें . पर ऐसे भी साधक हैं जिन्होंने इनको घर में स्थापि किया हुआ है और रोग , शोक , विघ्न , बाधा कोसं दूर हैं . फि क्या कहा जाए – लोग ने व्य ही भ्र फैलाया हुआ है इनके बारे में ताकि पंडित पुरोहितों कि जी हुजूरी करते रहें . इसीलिए शक्ति की साधना में कहा जाए तो जाकी रही भावना जैसी , प्रभु मूरत तिन देखि तैसी . खैर ....

खुद से करिए और इनका जबर्दस्त प्रभाव खुद देखिये . इनका पुरश्चरण आठ लाख का है .

इनकी पूजा के समय ऐसी भावना करनी चाहिए की देवी प्रसन्न होकर मेरे समस्त दुःख, रोग , दरि ता ,कष्ट ,विघ्न ,बढ़ाये, क्लेशादी को अपने सूप में समेत कर मेरे घर से विदा हो रही हैं और हमें धन , लक्ष्मी , सुख एवं शांति का आशीर्वाद दे रही हैं।

कौवे के पंखो का इनकी साधना में प्रयोग होता है . इनका यंत्र का निर्माण पान के पत्ते ये कौवे के पंख पे हनुमान जी को चढ़ने वाले सिन्दूर से त्रिशूल बनाकर किया जाता है . एक डब्बे में कौवे के पंख को स्थापित करें . आवाहन करके पंचोपचार पूजन करें फिर पूजा समाप्त होने पे माँ का विसर्जन करके आगे के साधना प्रयोग के लिए डब्बे को सुरक्षित रख दें . हवन में भी कौवे का पंख प्रयोग होता है . ध्यान रखे इसके लिए कौवे को मारे नहीं बल्कि निचे गिरा हुआ पंख का ही प्रयोग करें . पंचमकार से भी इनकी साधना होती है पर जो सामान्य साधकों के लिए नहीं है वो यहाँ नहीं बताया जायेगा .दक्षिणाचार से भी सारे कार्यतुरंत होते हैं . मन्त्र प्रयोग की चर्चा आगे करेंगे .

निरंतर इनकी स्तुति करने वाला कभी धन विहीन नहीं होता व उसे दुःख छूते भी नहीं , बड़ी से बड़ी शक्ति भी इनके सामने नहीं टिक पाती इनका तेज सर्वोच्च कहा जाता है। श्वेतरूप व धूम्र अर्थात धुंआ इनको प्रिय है पृथ्वी के आकाश में स्थित बादलों में इनका निवास होता है।

देवी की स्तुति से देवी की अमोघ कृपा प्राप्त होती है

---

**स्तुति :-**

विवर्णा चंचला कृष्णा दीर्घा च मलिनाम्बर ,

विमुक्त कुंतला रूक्षा विधवा विरलद्विजा,

काकध्वजरथारूढा विलम्बित पयो ,

सूर्पहस्तातिरुक्षाक्षी धृतहस्ता वरान्विता,

प्रवृद्वघोणा तु भृशं कुटिला कुटिलेक्षणा,

क्षुत्पिपासार्दिता नित्यं भयदा काल्हास्पदा |

---

**॥ सौभाग्यदात्री धूमावती कवचम् ॥**

धूमावती मुखं पातु धूं धूं स्वाहास्वरूपिणी ।

ललाटे विजया पातु मालिनी नित्यसुन्दरी ॥१॥

कल्याणी ह्रदयपातु हसरीं नाभि देशके ।

सर्वांग पातु देवेशी निष्कला भगमालिना ॥२॥

सुपुण्यं कवचं दिव्यं यः पठेदभक्ति संयुतः ।

सौभाग्यमतुलं प्राप्य जाते देविपुरं ययौ ॥३॥

॥ श्री सौभाग्यधूमावतीकल्पोक्त धूमावतीकवचम्

---

## ॥ धूमावती कवचम् ॥

श्रीपार्वत्युवाच

धूमावत्यर्चनं शम्भो श्रुतम् विस्तरतो मया ।

कवचं श्रोतुमिच्छामि तस्या देव वदस्व मे ॥१॥

श्रीभैरव उवाच

शृणु देवि परङ्गुह्यन्न प्रकाश्यङ्कलौ युगे ।

कवचं श्रीधूमावत : शत्रुनिग्रहकारकम् ॥२॥

ब्रह्माद्या देवि सततम् यद्वशादरिघातिनः ।

योगिनोऽभवञ्छत्रुघ्ना यस्या ध्यानप्रभावतः ॥३॥

ॐ अस्य श्री धूमावती कवचस्य पिप्पलाद ऋषिः निवृत छन्दः ,श्री धूमावती देवता, धूं बीजं ,स्वाहा शक्तिः ,धूमावती कीलकं , शत्रुहनने पाठे विनियोगः ॥

ॐ धूं बीजं मे शिरः पातु धूं ललाटं सदाऽवतु ।

धूमा नेत्रयुग्मं पातु वती कर्णौ सदाऽवतु ॥१॥

दीर्घा तुउदरमध्ये तु नाभिं में मलिनाम्बरा ।

शूर्पहस्ता पातु गुह्यं रूक्षा रक्षतु जानुनी ॥२॥

मुखं में पातु भीमाख्या स्वाहा रक्षतु नासिकाम् ।

सर्वा विद्याऽवतु कण्ठम् विवर्णा बाहुयुग्मकम् ॥३॥

चञ्चला हृदयम्पातु दुष्टा पार्श्वं सदाऽवतु ।

धूमहस्ता सदा पातु पादौ पातु भयावहा ॥४॥

प्रवृद्धरोमा तु भृशं कुटिला कुटिलेक्षणा ।

क्षुत्पिपासार्द्दिता देवी भयदा कलहप्रिया ॥५॥

सर्वाङ्गम्पातु मे देवी सर्वशत्रुविनाशिनी ।

इति ते कवचम्पुण्यङ्कथितम्भुवि दुर्लभम् ॥६॥

न प्रकाश्यन्न प्रकाश्यन्न प्रकाश्यङ्कलौ युगे ।

पठनीयम्महादेवि त्रिसन्ध्यन्ध्यानतत्परैः ।।७॥

दुष्टाभिचारो देवेशि तद्गात्रन्नैव संस्पृशेत् । ७.१।

॥ इति भैरवीभैरवसम्वादे धूमावतीतन्त्रे धूमावतीकवचं

सम्पूर्णम् ॥

---

## धूमावती अष्टक स्तोत्रं

॥ अथ स्तोत्रं ॥

प्रातर्या स्यात्कुमारी कुसुमकलिकया जापमाला ज

मध्याह्ने प्रौढरूपा विकसितवदना चारुनेत्रा निशायाम् ।

सन्ध्यायां वृद्धरूपा गलितकुचयुगा मुण्डमालां

वहन्ती सा देवी देवदेवी त्रिभुवनजननी कालिका पातु युष्मान् ।। १ ।।

बद्ध्वा खट्वाङ्गकोटौ कपिलवरजटामण्डल

कृत्वा दैत्योत्तमाङ्गैस्स्रजमुरसि शिर शेखरन्ताक्ष्र्यपक्षैः ।

पूर्णं रक्तैस्सुराणां यममहिषमहाशृङ्गमादाय पाणौ

पायाद्वो वन्द्यमानप्रलयमुदितया भैरवः कालरात्र्याम् ।। २ ।।

चर्वन्तीमस्थिखण्डम्प्रकटकर -

उग्रङ्कुर्वाणा प्रेतमध्ये कहहकहकहाहास्यमुग्रङ्वृ शाङ्गी ।
नित्यन्नित्यप्रसक्ता डमरुडिमडिमां स्फारयन्ती मुखाब्जम्-
पायान्नश्चण्डिकेयं झझमझमझमा जल्पमाना भ्रमन्त || ३ ||

टण्टण्टण्टण्टटण्टाप्रकरटमटमानाटघण्टां
स्फेंस्फेंस्फेंस्कारकाराटकटकितहसा नादसङ्घट् ।
लोलम्मुण्डाग्रमाला ललहलहलहालोललोला चञ्चर्वन्
चण्डमुण्डं मटमटमटिते चर्वयन्ती पुनातु || ४ ||

वामे कर्णे मृगाङ्कप्रलयपरिगतन्दक्षिणे सूर्यबि
नक्षत्रहारंव्वरविकटजटाजूटके मुण्डमाल ।
स्कन्धे कृत्वोरगेन्द्रध्वजनिकरयुतम्ब्रह्मकङ्क
संहारे धारयन्ती मम हरतु भयम्भद्रदा भद्रकाली || ५ ||

तैलाभ्यक्तैकवेणी त्रपुमयविलसत्कर्णिकाक्रान्त
लौहेनैकेन कृत्वा चरणनलिनकामात्मनः पादशोभा ।
दिग्वासा रासभेन ग्रसति जगदिदंय्या यवाकर्णपूरा
वर्षिण्यातिप्रबद्धा ध्वजविततभुजा सासि देवि त्वमेव || ६ ||

सङ्ग्रामे हेतिकृत्वैस्सरुधिरदशनैर्यद्भटानां

शिरोभिर्मालामावद्ध्य मूर्ध्नि ध्वजविततभुजा त्वं श्मशाने प्रविष्टा ।

दृष्टा भूतप्रभूतैः पृथुतरजघना वद्धनागेन्द्रकाञ्ची

शूलग्रव्यग्रहस्ता मधुरुधिरसदा ताम्रनेत्रा निशायाम् ।। ७ ।।

दंष्ट्रा रौद्रे मुखेऽस्मिंस्तव विशति जगद्देवि सर्वं क्षणार्द्धात्

संसारस्यान्तकाले नररुधिरवशा सम्प्लवे भूमधूम्रे ।

काली कापालिकी साशवशयनतरा योगिनी योगमुद्रा रक्तारुद्धिः

सभास्था भरणभयहरा त्वं शिवा चण्डघण्टा ।। ८ ।।

धूमावत्यष्टकम्पुण्यं सर्वापद्विनिवारकम् ।

यः पठेत्साधको भक्त्या सिद्धिं व्विन्दन्ति वाञ्छिताम् ।। ९ ।।

महापदि महाघोरे महारोगे महारणे ।

शत्रूच्चाटे मारणादौ जन्तूनाम्मोहने तथा ।। १० ।।

पठेत्स्तोत्रमिदन्देवि सर्वत्र सिद्धिभाग्भवेत् ।

देवदानवगन्धर्वा यक्षराक्षसपन्न ।। ११ ।।

सिंहव्याघ्रादिकास्सर्वे स्तोत्रस्मरणमात्रतः ।

दूराद्दूरतरं य्यान्ति किम्पुनर्मानुषादयः || १२ ||

स्तोत्रेणानेन देवेशि किन्न सिद्ध्यति भूतले |

सर्वशान्तिर्भवेद्देवि ह्यन्ते निर्वाणतां व्व्रजेत् || १३ ||

|| इत्यूद्ध्र्वाम्नाये धूमावतीअष्टक स्तोत्रं समाप्तम् ||

देवी की कृपा से साधक धर्म अर्थ काम और मोक्ष प्राप्त कर लेता है। ऐसा मानना है की कुण्डलिनी चक्र के मूल में स्थित कूर्म में इनकी शक्ति विद्यमान होती है। देवी साधक के पास बड़े से बड़ी बाधाओं से लड़ने और उनको जीत लेने की क्षमता आ जाती है।

महाविद्या धूमावती के मन्त्रों से बड़े से बड़े दुखों का नाश होता है।

**१- देवी माँ का महामंत्र है-**

**धूं धूं धूमावती ठः ठः**

इस मंत्र से काम्य प्रयोग भी संपन्न किये जाते हैं व देवी को पुष्प अत्यंत प्रिय हैं इसलिए केवल पुष्पों के होम से ही देवी कृपा कर देती है,आप भी मनोकामना के लिए यज्ञ कर सकते हैं,जैसे-

1. राई में सेंधा नमक मिला कर होम करने से बड़े से बड़ा शत्रु भी समूल रूप से न हो जाता है
2. नीम कि पत्तिय सहित घी का होम करने से लम्ब समस से चला आ रहा ऋण न होता है
3. जटामांसी और कालीमि से होम करने पर काल्सर्पादी दोष न होते हैं व क्रूर ग्रह नष्ट हैं

4. रक्तचंदन □□□ □□ □□□ में □□□□ लें □ □□ □□मिश्रित □□ □□□ करें □□ दुर्भाग्यशाली मनुष्य □□ भाग्य □□ □□□ □□□□ □□

5. □□ □ □□□□□□□□ □□□□□□ गरीबी □□□ □□□□□ □□ □□□□ □□

6 . □□□ □□□□ मिर्च से□□□ □□□□□□ □□□□□□ में □□□ व्यक्ति मुक्त □□ □□□□ □□

7 . मीठी □□टी □ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□□□ □□□ □ □□□□□ □□□ □□□ □□□ शीघ्र नष्ट □□□□ □□

२- धूमावती गायत्री मंत्र:-

**ओम धूमावत्यै विद्महे संहारिण्यै धीमहि तन्नो धूमा प्रचोदयात।**

वाराही विद्या में इन्हे धूम्रवाराही कहा गया है जो शत्रुओं के मारन और उच्चाटन में प्रयोग की जाती है।

3. धूमावती के साबर मन्त्र :-

□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□,<br>
□ □□□ मण्डल धुन्धुकार,<br>
□ □□□ दिशा □□□□ □□,<br>
□□□ □□ □□□ □□□□□,<br>
□ □□□ दिशा □□धूमावन्ती □□ ,<br>
□□□ ध्वजा □□ □□ □□□□□ ,<br>
□□□धरत्री □□□□ □□□,<br>
विधवा रुप लम्बे □□□,<br>
लम्बी □□□ कुटिल नेत्र दुष्टा स्व□□□,<br>
डमरु □□□□भद्रकाली,<br>
क्लेश □□□ कालरात्रि ,<br>
□□□ □□□□ □□□ किट किटा हास्य करी ,<br>
□□□ रक्षन्ते □□□ भक्षन्ते

□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□,

धूमावन्तीपुरी में □□□,

□ □□□□ □□□ □ □□ ,

□□□ □ □□□□ □□□ □ □□□□

□□□ □ □□□□ □□□ □ □□□□ ,

□□ □□□श्रीशम्भुज गुरु □□□□□□□ ,

□□ □□□ □□□□

□ □□□□□□□□□□ □□ स्वाहा □

**विशेष पूजा सामग्रियां-**

पूजा में जिन सामग्रियों के प्रयोग से देवी की विशेष कृपा मिलाती है

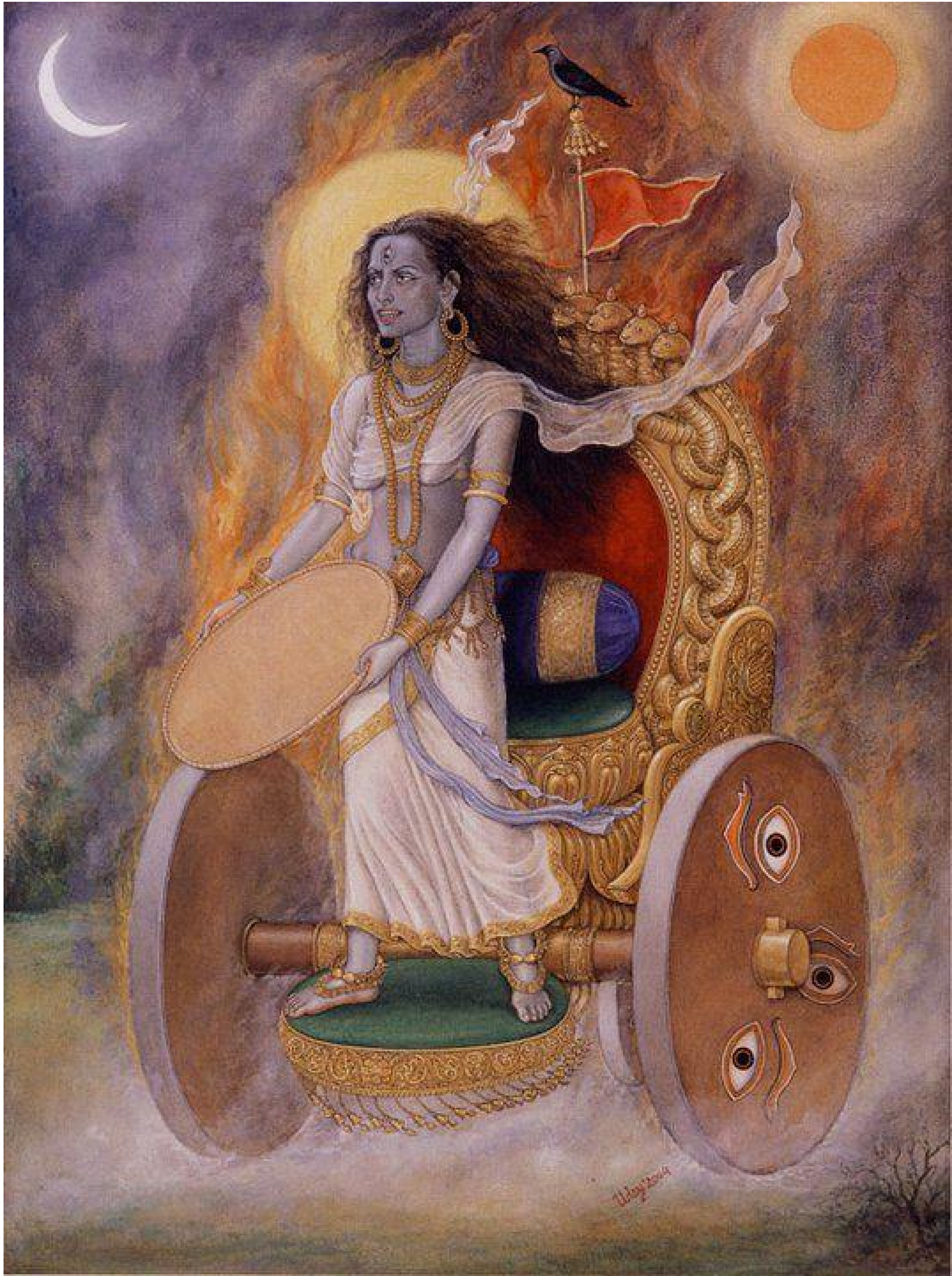
□□□□ □□ □□□□□, □□ □□□□□, सफेद वस्त्र व पुष्पमालाएं , वे□□□, अक्षत, □□, □□□□ □□□, □□□□, □□, □□, सुपारी व नारियल , मेवा □ सूखे फल प्रसाद रूप में अर्पित करें।

सूप की आकृति पूजा स्थान पर रखें

दूर्वा, □□□□□□, □□□, □□□, चन्दन चढ़ाएं, संभव हो तो मिटटी के पात्रों का ही पूजन में प्रयोग करें।

**देवी की पूजा में सावधानियां व निषेध-**

बिना गुरु दीक्षा के इनकी साधना कदापि न करें। थोड़ी सी भी चूक होने पर विपरीत फल प्राप्त होगा और पारिवारिक कलह दरिद्र का शिकार होंगे।





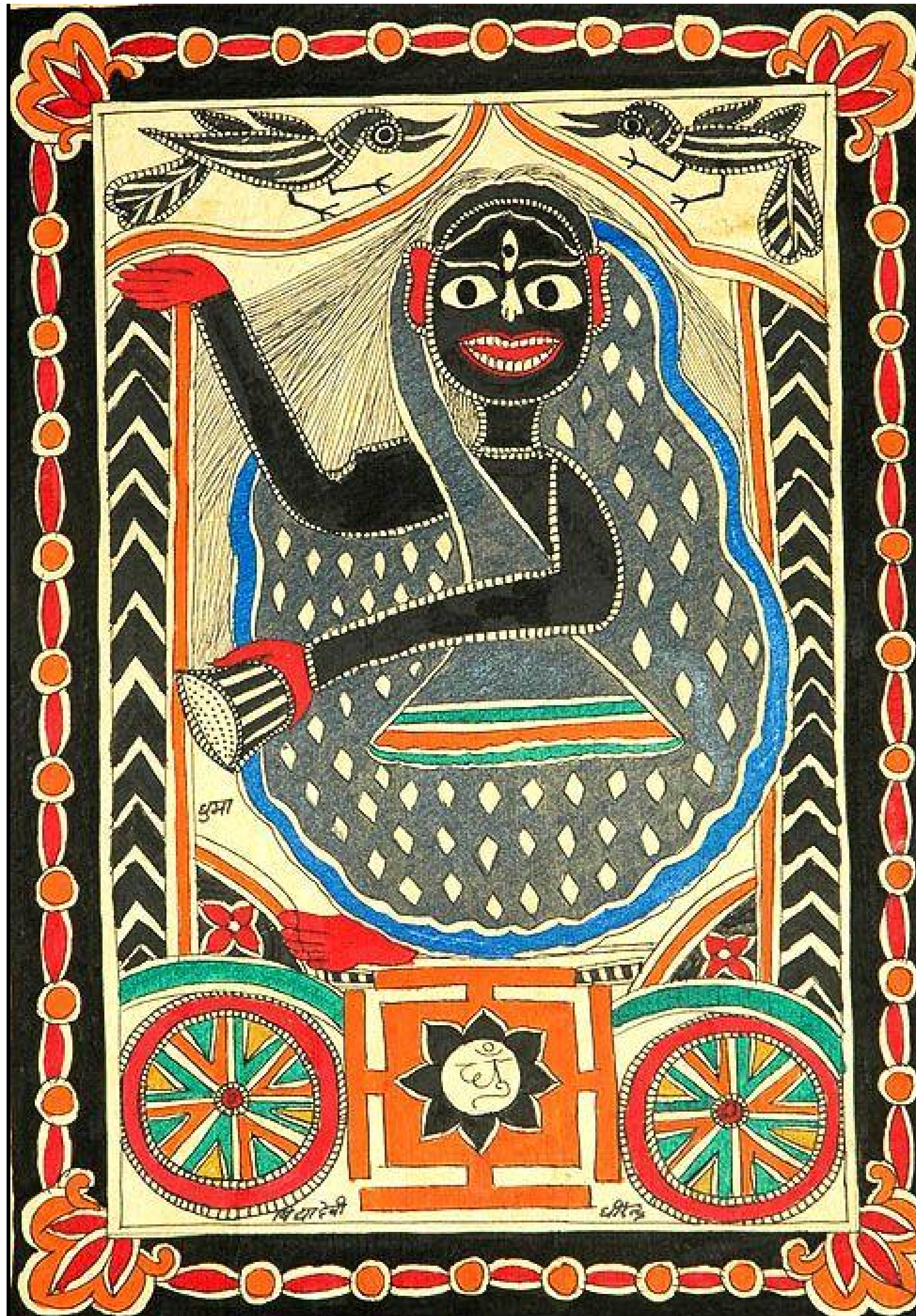


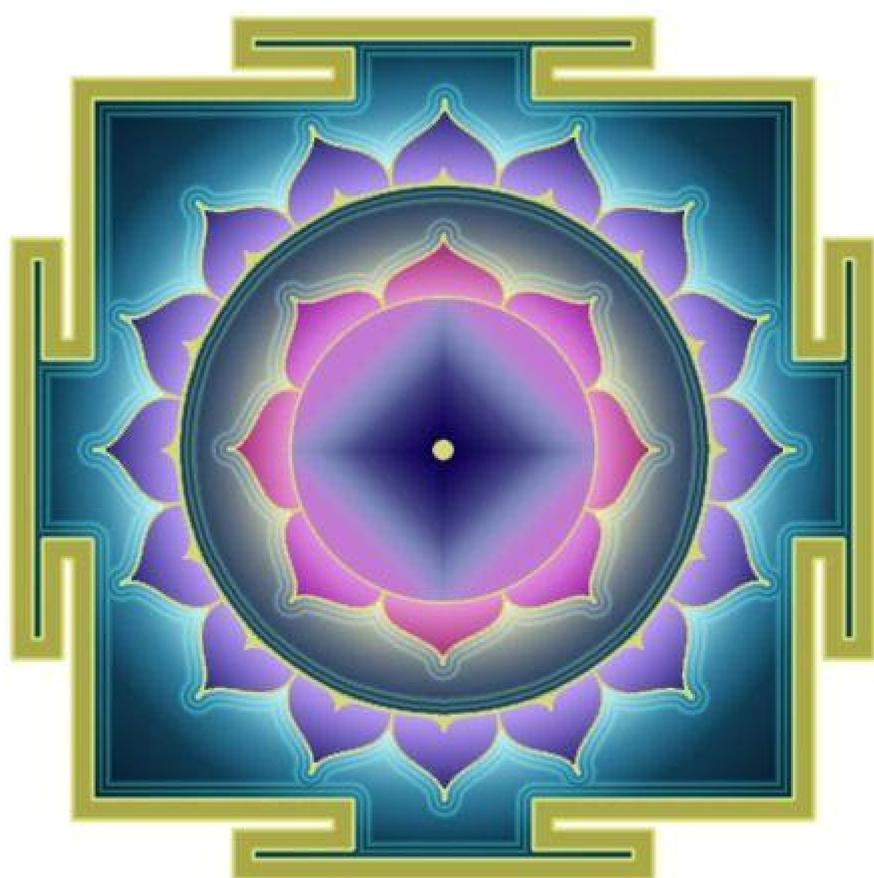




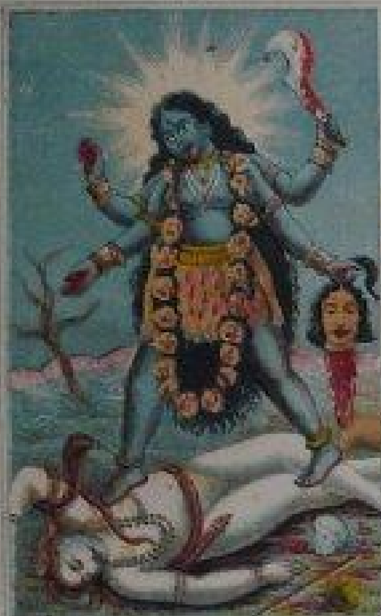

ধূমাবতী
धूमावती



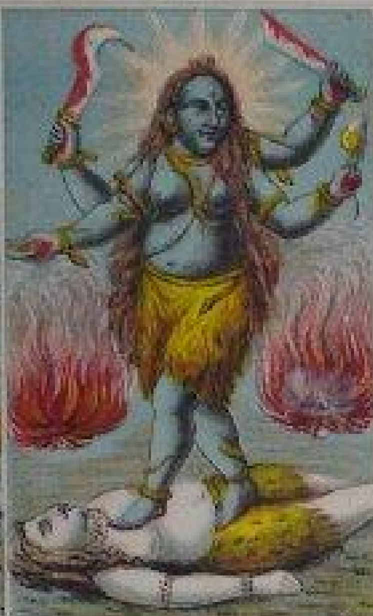

धुमा



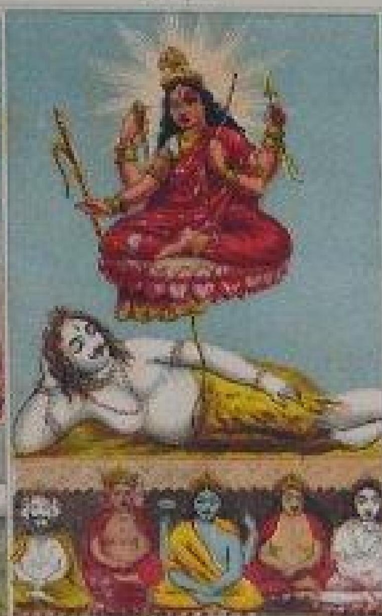
কালী



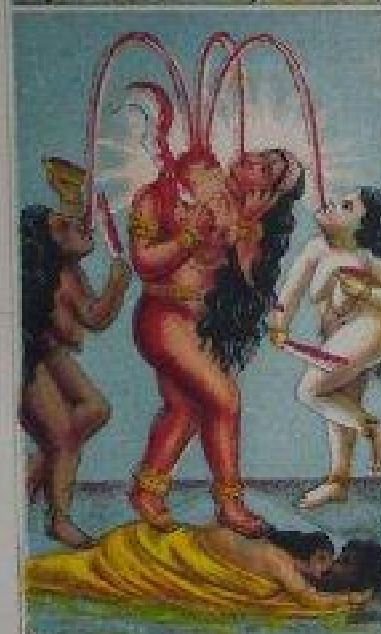
তারা



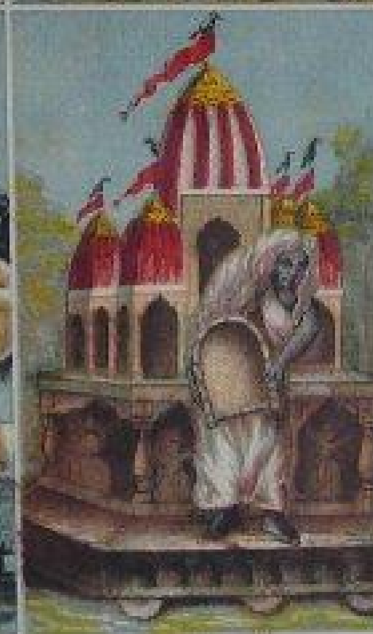
ষোড়শী



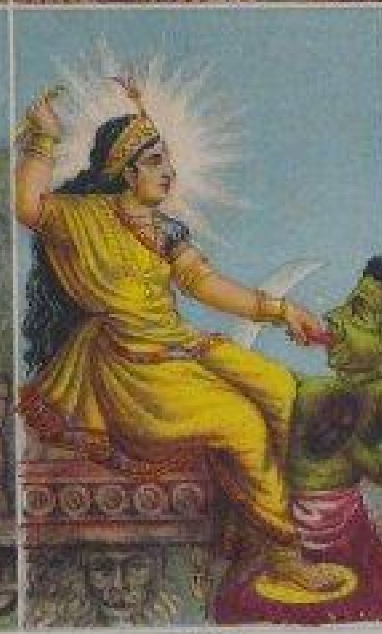




ছিন্নমস্তা



ধূমাবতী



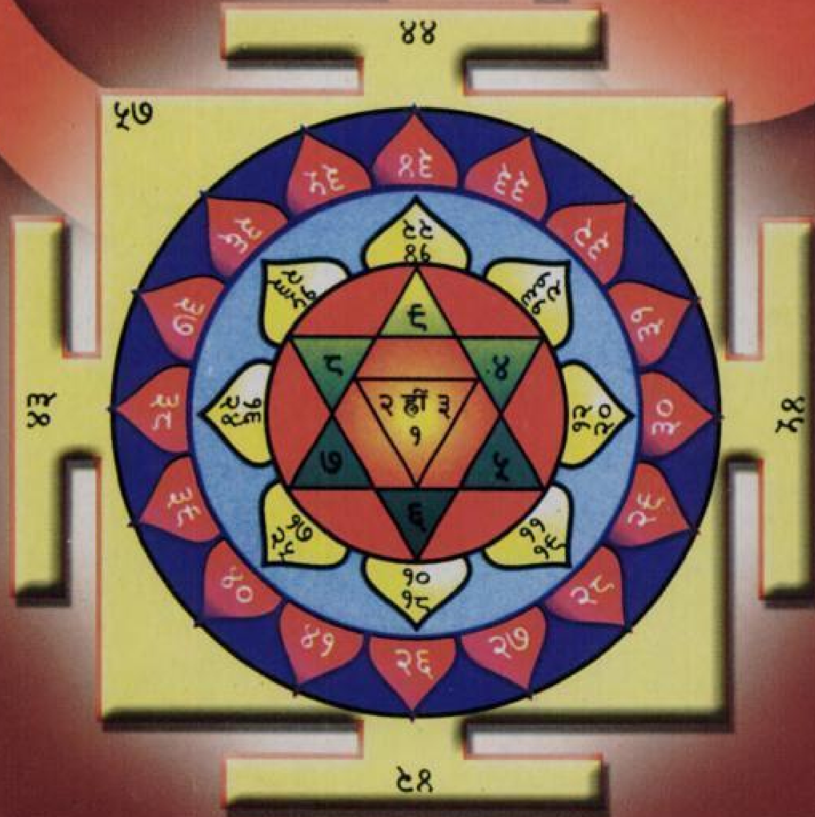
বগলা



Dasa Mahavidya - The ten aspects of divine energy.

पं. राधाकृष्ण श्रीमाली

# धूमावती एवं बगलामुखी तांत्रिक साधनाएं



धूमावती एवं बगलामुखी तांत्रिक साधनाएं, छिन्नमस्ता एवं त्रिपुरभैरवी तांत्रिक साधनाएं,
षोडशी एवं भुवनेश्वरी तांत्रिक साधनाएं, महाकाली एवं तारा तांत्रिक साधनाएं, मातंगी एवं कमला तांत्रिक साधनाएं

॥ श्रीधूमावती ध्यानम् ॥

विवर्णा चञ्चला दुष्टा दीर्घा च मलिनाम्बरा ।
विमुक्तकुन्तला रूक्षा विधवा विरलद्विजा ॥ १॥

काकध्वजरथारूढा विलम्बितप
शूर्पहस्तातिरूक्षाक्षा धूतहस्ता वरान्विता ॥ २॥

प्रवृद्धघोणा तु भृशं कुटिला कुटिलेक्षणा ।
क्षुत्पिपासार्दि ता ध्येया भयदा कलहास्पदा ॥ ३॥

अत्युच्चा मलिनाम्बराऽखिलजनोद्वेगावहा दुर्मना
रूक्षाक्षित्रितया विशालदशना सूर्योदरी चञ्चला
प्रस्वेदाम्बुचिता क्षुधाकुलतनुः कृष्णाऽतिरूक्षप्रभा
ध्येया मुक्तकचा सदाप्रियकलिर्धूमावती मन्त्रिणा ॥ ४॥

इति श्रीधूमावती ध्यानम् ॥

॥ श्रीधूमावतीहृदयम् ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥

श्रीउमामहेश्वराभ्यां नमः ॥

श्रीधूमावत्यै नमः ॥

ॐ अस्य श्रीधूमावतीहृदयस्तोत्रमन्त्रस्य पिप्पलाद ऋषिः ।
अनुष्टुप्छन्दः । श्रीधूमावती देवता । धूं बीजम् । ह्रीं शक्तिः ।

क्लीं कीलकम् । सर्वशत्रुसंहरणे पाठे विनियोगः ॥

अथ हृदयादि षडङ्गन्यासः ।
ॐ धां हृदयाय नमः ।
ॐ धीं शिरसे स्वाहा ।
ॐ धूं शिखायै वषट् ।
ॐ धैं कवचाय हुम् ।
ॐ धौं नेत्रत्रयाय वौषट् ।
ॐ धः अस्त्राय फट् ।
इति हृदयादि षडङ्गन्यासः ॥

अथ करन्यासः ।
ॐ धां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ।
ॐ धीं तर्जनीभ्यां नमः ।
ॐ धूं मध्यमाभ्यां नमः ।
ॐ धैं अनामिकाभ्यां नमः ।
ॐ धौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।
ॐ धः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।
इति करन्यासः ॥

अथ ध्यानम् ।
ॐ धूम्राभां धूम्रवस्त्रां प्रकटितदशनां मुक्तवालाम्बराढ्यां
काकाङ्कर      नस्थां धवलकरयुगां शूर्पहस्तातिरूक्षाम् ।
नित्यं क्षुत्क्षान्तदेहां मुहुरतिकुटिलां वारिवाञ्छाविचित्रां
ध्यायेद्धूमावतीं वामनयनयुगलां भीतिदां भीषणास्याम् ॥ १॥

इति ध्यानम् ।
कल्पादौ या कालिकाद्याऽचीकलन्मधुकैटभौ ।
कल्पान्ते त्रिजगत्सर्वं धूमावतीं भजामि ताम् ॥ २

गुणागाराऽगम्यगुणा या गुणा गुणवर्द्धिनी ।
गीतावेदार्थतत्त्वज्ञैर्धूमावतीं भजामि ताम् ॥ ३॥

खट्वाङ्गधारिणी खर्वा खण्डिनी खलरक्षसाम्
धारिणी खेटकस्यापि धूमावतीं भजामि ताम् ॥ ४॥

घूर्णा घूर्णकरा घोरा घूर्णिताक्षी घनस्वना ।
[illegible]

चर्वन्तीमस्थिखण्डानां चण्डमुण्डविदारिणीम्
चण्डाट्टहासिनीं देवीं भजे धूमावतीमहम् ॥ ६॥

छिन्नग्रीवां क्षताच्छन्नां छिन्नमस्तास्वरूपिणीम् ।
छेदिनीं दुष्टसङ्घानां भजे धूमावतीमहम् ॥ ७॥

जाता या याचिता देवैरसुरणां विघाति[illegible]
जल्पन्ती बहु गर्जन्ती भजे तां धूम्ररूपिणीम् ॥ ८॥

झङ्कारकारिणीं झञ्झां झञ्झमाझमवादिनी
झटित्याकर्षिणीं देवीं भजे धूमावतीमहम् ॥ ९॥

टीपटङ्कारसंयुक्तां धनुष्टङ्कारकारिणीम् ।
घोरां घनघटाटोपां वन्दे धूमावतीमहम् ॥ १०[illegible]

ठं ठं ठं ठं मनुप्रीतिं ठः ठः मन्त्रस्वरूपिणीम् ।
ठमकाह्वगतिप्रीतां भजे धूमावतीमहम् ॥ ११[illegible]

डमरूडिण्डिमारावां डाकिनीगणमण्डिताम् ।
डाकिनीभोगसन्तुष्टां भजे धूमावतीमहम् ॥ १२॥

ढक्कानादेन सन्तुष्टां ढक्कावादकसिद्धिदाम् ।
ढक्कावादचलच्चित्तां भजे धूमावतीमहम् ॥ □□□

तत्त्ववार्त्ताप्रियप्राणां भवपाथोधितारिणीम् ।
तारस्वरूपिणीं तारां भजे धूमावतीमहम् ॥ १४॥

थां थीं थूं थें मन्त्ररूपां थैं थौं थं थः स्वरूपिणीम् ।
थकारवर्णसर्वस्वां भजे धूमावतीमहम् □□□

दूर्गास्वरूपिणीं देवीं दुष्टदानवदारिणीम् ।
देवदैत्यकृतध्वंसां वन्दे धूमावत□□□□ □□ □□□

ध्वान्ताकारान्धकध्वंसां मुक्तधम्मिल्लधारिणीम् ।
धूमधाराप्रभां धीरां भजे धूमावतीमहम् ॥ १७□

नर्त्तकीनटनप्रीतां नाट्यकर्मविवर्द्धिनीम् ।
नारसिंहीन्नराराध्यां नौमि धूमावतीमहम् ॥ १८॥

पार्वतीपतिसम्पूज्यां पर्वतोपरिवासिनीम् ।
पद्मारूपां पद्मपूज्यां नौमि □□□□□□□□ □□ □□□

फूत्कारसहितश्वासां फट् मन्त्रफलदायिनीम् ।
फेत्कारिगणसंसेव्यां सेवे धूमावतीमहम् ॥ २०□

बलिपूज्यां बलाराध्यां बगलारूपिणीं वराम् ।
ब्रह्मादिवन्दितां विद्यां वन्दे धूमावतीमहम् ॥ २१॥

भव्यरूपां भवाराध्यां भुवनेशीस्वरूपिणीम् ।
भक्तभव्यप्रदान्देवीं भजे धूमावतीमहम् ॥ २□□

मायां मधुमतीं मान्यां मकरध्वजमानिताम् ।

मत्स्यमांसमदास्वादां मन्ये धूमावतीमहम् ॥ २□□

योगयज्ञप्रसन्नास्यां योगिनीपरिसेविताम् ।
यशोदां यज्ञफलदां यजे धूमावतीमहम् ॥ २□□

रामाराध्यपदद्वन्द्वां रावणध्वंसकारिणीम् ।
□□शरमणीं पूज्यामहं धूमावतीं श्रये ॥ २□□

लक्षलीलाकलालक्ष्यां लोकवन्द्यपदाम्बुजाम
लम्बितां बीजकोशाढ्यां वन्दे धूमावतीमहम् ॥ २६॥

बकपूज्यपदाम्भोजां बकध्यानपरायण
बालां बकारिसन्ध्येयां वन्दे धूमावतीमहम् ॥ २७॥

शाङ्करीं शङ्करप्राणां सङ्कटध्वंसकारिणी
□त्रुसंहारिणीं शुद्धां श्रये धूमावतीमहम् ॥ २८॥

षडाननारिसंहन्त्रीं षोडशीरूपधारिणीम् ।
षड्रसास्वादिनीं सौम्यां सेवे धूमावतीमहम् ॥ २९॥

सुरसेवितपादाब्जां सुरसौख्यप्रदायिनीम् ।
सुन्दरीगणसंसेव्यां सेवे धूमावतीमहम् ॥ ३०॥

हेरम्बजननीं योग्यां हास्यलास्यविहारिणीम् ।
हारिणीं शत्रुसङ्घानां सेवे धूमावतीमहम् ॥ ३१॥

क्षीरोदतीरसंवासां क्षीरपानप्रहर्षिताम् ।
क्षणदेशेज्यपादाब्जां सेवे धूमावतीमहम् ॥ ३□□

चतुस्त्रिंशद्वर्णकानां प्रतिवर्णादिनामभिः ।
कृतं तु हृदयस्तोत्रं धूमावत्यां सुसिद्धिदम् ॥ ३३□

य इदं पठति स्तोत्रं पवित्रं पापनाशनम् ।
स प्राप्नोति परां सिद्धिं धूमावत्याः प्रसादतः ॥ ३४॥

पठन्नेकाग्रचित्तो यो यद्यदिच्छति मानवः ।
तत्सर्वं समवाप्नोति सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ॥ ३[illegible]

इति धूमावतीहृदयं समाप्तम् ॥

॥ श्रीधूमावत्यष्टोत्तरशतनाम     त्रम् ॥

ईश्वर उवाच
धूमावती धूम्रवर्णा धूम्रपानपरायणा
धूम्राक्षमथिनी धन्या धन्यस्थाननिवासिनी ॥ [illegible]

अघोराचारसन्तुष्टा अघोराचारमण्डिता ।
अघोरमन्त्रसम्प्रीता अघोरमन्त्रपूजिता ॥ [illegible]

अट्टाट्टहासनिरता मलिनाम्बरधारिर्णी
वृद्धा विरूपा विधवा विद्या च विरलद्विजा ॥ ३॥

प्रवृद्धघोणा कुमुखी कुटिला कुटिलेक्षणा ।
कराली च करालास्या कङ्काली शूर्पधारिणी ॥ [illegible]

काकध्वजरथारूढा केवला कठिना कुहूः ।
क्षुत्पिपासार्दिता नित्या ललज्जिह्वा दिगम्बरी ॥ ५॥

दीर्घोदरी दीर्घरवा दीर्घाङ्गी दीर्घमस्तका
विमुक्तकुन्तला कीर्त्या कैलासस्थानवासिनी ॥ ६॥

क्रूरा कालस्वरूपा च कालचक्रप्रवर्तिनी ।

विवर्णा चञ्चला दुष्टा दुष्टविध्वंसकारिणी ॥ ७॥

चण्डी चण्डस्वरूपा च चामुण्डा चण्डनिस्वना ।
चण्डवेगा चण्डगतिश्चण्डमुण्डविनाशिनी □□

चाण्डालिनी चित्ररेखा चित्राङ्गी चित्ररूपिणी ।
कृष्णा कपर्दिनी कुल्ला कृष्णारूपा क्रियावती ॥ ९॥

कुम्भस्तनी महोन्मत्ता मदिरापानविह्वला ।
चतुर्भुजा ललज्जिह्वा शत्रुसंहारकारिणी ॥ १०॥

शवारूढा शवगता श्मशानस्थानवासिनी ।
दुराराध्या दुराचारा दुर्जनप्रीतिदायिनी ॥ ११॥

निर्मांसा च निराकारा धूतहस्ता वरान्विता ।
कलहा च कलिप्रीता कलिकल्मषनाशि □□□

महाकालस्वरूपा च महाकालप्रपूजिता
महादेवप्रिया मेधा महासङ्कटनाशिनी ॥ □□□

भक्तप्रिया भक्तगतिर्भक्तशत्रुविनाशिनी ।
भैरवी भुवना भीमा भारती भुवनात्मिका ॥ १४॥

भेरुण्डा भीमनयना त्रिनेत्रा बहुरूपिणी ।
त्रिलोकेशी त्रिकालज्ञा त्रिस्वरूपा त्रयीतनुः ॥ १५॥

त्रिमूर्तिश्च तथा तन्वी त्रिशक्तिश्च त्रिशूलिनी ।
इति धूमामहत्स्तोत्रं नाम्नामष्टोत्तरात्मकम् ॥ १६॥

मया ते कथितं देवि शत्रुसङ्घविनाशनम् ।
कारागारे रिपुग्रस्ते महोत्पाते महाभये ॥ १७॥

इदं स्तोत्रं पठेन्मर्त्यो मुच्यते सर्वसङ्कटैः ।
गुह्याद्गुह्यतरं गुह्यं गोपनीयं प्रयत्नतः ॥ १८॥

चतुष्पदार्थदं नृणां सर्वसम्पत्प्रदायकम् ॥ [illegible]

इति श्रीधूमावत्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ श्रीधूमावत्यष्टोत्तरशतनामावर्ल

श्रीधूमावत्यै नमः ।
श्रीधूम्रवर्णायै नमः ।
श्रीधूम्रपानपरायणायै नमः ।
श्रीधूम्राक्षमथिन्यै नमः ।
श्रीधन्यायै नमः ।
श्रीधन्यस्थाननिवासिन्यै नमः ।
श्रीअघोराचारसन्तुष्टायै नमः ।
श्रीअघोराचारमण्डितायै नमः ।
श्रीअघोरमन्त्रसम्प्रीतायै नमः ।
श्रीअघोरमन्त्रसम्पूजितायै नमः । १०
श्रीअट्टाट्टहासनिरतायै नमः ।
श्रीमलिनाम्बरधारिण्यै नमः ।
श्रीवृद्धायै नमः ।
श्रीविरूपायै नमः ।
श्रीविधवायै नमः ।
श्रीविद्यायै नमः ।
श्रीविरलाद्विजायै नमः ।
श्रीप्रवृद्धघोणायै नमः ।
श्रीकुमुख्यै नमः ।
श्रीकुटिलायै नमः । २०

श्रीकुटिलेक्षणायै नमः ।
श्रीकराल्यै नमः ।
श्रीकरालास्यायै नमः ।
श्रीकङ्काल्यै नमः ।
श्रीशूर्पधारिण्यै नमः ।
श्रीकाकध्वजरथारूढायै नमः ।
श्रीकेवलायै नमः ।
श्रीकठिनायै नमः ।
श्रीकुह्वे नमः ।
श्रीक्षुत्पिपासार्दितायै नमः । ३०
श्रीनित्यायै नमः ।
श्रीललज्जिह्वायै नमः ।
श्रीदिगम्बरायै नमः ।
श्रीदीर्घोदर्यै नमः ।
श्रीदीर्घरवायै नमः ।
श्रीदीर्घाङ्ग्यै नमः ।
श्रीदीर्घमस्तकायै नमः ।
श्रीविमुक्तकुन्तलायै नमः ।
श्रीकीर्त्यायै नमः ।
श्रीकैलासस्थानवासिन्यै नमः । ४०
श्रीक्रूरायै नमः ।
श्रीकालस्वरूपायै नमः ।
श्रीकालचक्रप्रवर्तिन्यै नमः ।
श्रीविवर्णायै नमः ।
श्रीचञ्चलायै नमः ।
श्रीदुष्टायै नमः ।
श्रीदुष्टविध्वंसकारिण्यै नमः ।
श्रीचण्ड्यै नमः ।

श्रीचण्डस्वरूपायै नमः ।

श्रीचामुण्डायै नमः । ५०

श्रीचण्डनिःस्वनायै नमः ।

श्रीचण्डवेगायै नमः ।

श्रीचण्डगत्यै नमः ।

श्रीचण्डविनाशिन्यै नमः ।

श्रीमुण्डविनाशिन्यै नमः ।

श्रीचाण्डालिन्यै नमः ।

श्रीचित्ररेखायै नमः ।

श्रीचित्राङ्ग्यै नमः ।

श्रीचित्ररूपिण्यै नमः ।

श्रीकृष्णायै नमः । ६०

श्रीकपर्दिन्यै नमः ।

श्रीकुल्लायै नमः ।

श्रीकृष्णरूपायै नमः ।

श्रीक्रियावत्यै नमः ।

श्रीकुम्भस्तन्यै (स्थन्यै ?) □□□ □

श्रीमहोन्मत्तायै नमः ।

श्रीमदिरापानविह्वलायै नमः ।

श्रीचतुर्भुजायै नमः ।

श्रीललज्जिह्वायै नमः ।

श्रीशत्रुसंहारकारिण्यै नमः । ७०

श्रीशवारूढायै नमः ।

श्रीशवगतायै नमः ।

श्रीश्मशानस्थानवासिन्यै नमः ।

श्रीदुराराध्यायै नमः ।

श्रीदुराचारायै नमः ।

श्रीदुर्जनप्रीतिदायिन्यै नमः ।

श्रीनिर्मां[illegible]

श्रीनिराकारायै नमः ।

श्रीधूमहस्तायै नमः ।

श्रीवरान्वितायै नमः । ८०

श्रीकलहायै नमः ।

श्रीकलिप्रीतायै नमः ।

श्रीकलिकल्मषनाशिन्यै नमः

श्रीमहाकालस्वरूपायै नमः ।

श्रीमहाकालप्रपूजितायै नमः ।

श्रीमहादेवप्रियायै नमः ।

श्रीमेधायै नमः ।

श्रीमहासङ्   नाशिन्यै नमः ।

श्रीभक्तप्रियायै नमः ।

श्रीभक्तगत्यै नमः । ९०

श्रीभक्तशत्रुविनाशिन्यै नमः ।

श्रीभैरव्यै नमः ।

श्रीभुवनायै नमः ।

श्रीभीमायै नमः ।

श्रीभारत्यै नमः ।

श्रीभुवनात्मिकायै नमः ।

श्रीभेरुण्डायै नमः ।

श्रीभीमनयनायै नमः ।

श्रीत्रिनेत्रायै नमः ।

श्रीबहुरूपिण्यै नमः । १००

श्रीत्रिलोकेश्यै नमः ।

श्रीत्रिकालज्ञायै नमः ।

श्रीत्रिस्वरूपायै नमः ।

श्रीत्रयीतनवे नमः ।

श्रीत्रिमूर्त्यै नमः ।
श्रीतन्व्यै नमः ।
श्रीत्रिशक्तये नमः ।
श्रीत्रिशूलिन्यै नमः । १०८

Filename: Document1
Directory:
Template: C:\Users\hp\AppData\Roaming\Microsoft\Templates\Normal.dotm
Title:
Subject:
Author: hp
Keywords:
Comments:
Creation Date: 18-07-2017 11:58:00
Change Number: 1
Last Saved On:
Last Saved By:
Total Editing Time: 17 Minutes
Last Printed On: 18-07-2017 12:17:00
As of Last Complete Printing
Number of Pages: 37
Number of Words: 3,147 (approx.)
Number of Characters: 17,942 (approx.)